वायरल होती जिंदगी : युवाओं में रील्स का क्रेज

डॉ. विजय कुमार कन्नौजिया
असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)
श्री महंथ रामाश्रय दास पी जी कॉलेज
भुड़कूडा, गाजीपुर

सारांश -

इंटरनेट और स्मार्टफ़ोन ने जिस सामाजिक-सांस्कृतिक संसार को जन्म दिया है, उसमें 'रील्स संस्कृति' सबसे प्रभावशाली प्रवृत्ति बनकर उभरी है। इंस्टाग्राम, यूट्यूब शॉर्ट्स और फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म पर बनाए जाने वाले लघु वीडियो (Reels/Shorts) आज युवा जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। यह लेख रील्स के प्रति युवाओं के बढ़ते क्रेज का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें यह देखा गया है कि रील्स केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि पहचान, सामाजिक संबंध, सांस्कृतिक परिवर्तन और आर्थिक अवसर का नया माध्यम हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि इस क्रेज ने मानसिक स्वास्थ्य, समय प्रबंधन और पारंपरिक संस्कृति के लिए गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं।

प्रस्तावना -

मनुष्य सदैव संचार और अभिव्यक्ति के नए साधनों की खोज में रहा है। छपाई कला से लेकर रेडियो, टेलीविज़न और अब इंटरनेट तक हर माध्यम ने समाज और संस्कृति को नया रूप दिया है। वर्तमान डिजिटल युग में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने संचार की प्रक्रिया को अत्यंत गतिशील और बहुआयामी बना दिया है। इन प्लेटफॉर्म पर 'रील्स' की लोकप्रियता ने एक नई वायरल संस्कृति (Viral Culture) को जन्म दिया है। जहाँ पहले मनोरंजन और पहचान प्राप्त करने के लिए फिल्म या टीवी ही साधन थे, वहीं आज कोई भी साधारण युवा अपने मोबाइल से वीडियो बनाकर लाखों दर्शकों तक पहुँच सकता है।

रील्स का विचार सबसे पहले 'टिकटॉक' से लोकप्रिय हुआ। बाद में इंस्टाग्राम और यूट्यूब ने इसे अपने प्लेटफ़ॉर्म पर लागू किया। ये छोटे-छोटे वीडियो (15 सेकंड से 90 सेकंड तक) दर्शकों को आकर्षित करने के लिए संगीत, डायलॉग, फ़िल्टर और एडिटिंग टूल्स का प्रयोग करते हैं। भारत में 2019 के बाद रील्स का क्रेज तेजी से बढ़ा। आज लाखों युवा सुबह उठते ही और रात को सोने से पहले रील्स स्क्रॉल करना उनके दिनचर्या का हिस्सा बना चुका है।

रील्स के प्रति लोकप्रियता -

रील्स बनाने के लिए महंगे उपकरण या विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। केवल एक स्मार्टफ़ोन और इंटरनेट कनेक्शन से कोई भी व्यक्ति रील्स बना सकता है। एडिटिंग के लिए अनेक मुफ्त टूल्स, फ़िल्टर और संगीत पहले से उपलब्ध रहते हैं। इस सरलता ने युवाओं को बड़े पैमाने पर इस मंच से जोड़ दिया है। आज की 'तेज़-तर्रार जीवनशैली' में युवाओं के पास लंबा कंटेंट देखने का धैर्य कम होता जा रहा है। 15–60 सेकंड की छोटी वीडियो रील्स तुरंत ध्यान आकर्षित करती हैं। इन्हें कहीं भी और कभी भी देखा जा सकता है बस कुछ सेकंड का समय चाहिए। यह 'इंस्टेंट एंटरटेनमेंट' युवाओं को रील्स की ओर खींचता है।

सोशल मीडिया पर लाइक्स, कमेंट्स और फॉलोअर्स युवाओं के लिए नई 'प्रतिष्ठा' बन चुका है। जब कोई रील वायरल होती है तो युवा खुद को 'लोकप्रिय' महसूस करते हैं। यह आभासी पहचान (Virtual Identity) कई बार वास्तविक पहचान से अधिक महत्त्वपूर्ण लगने लगती है। यही कारण है कि रील्स बनाना अब केवल शौक नहीं, बल्कि 'स्वीकृति पाने का माध्यम' बन गया है। पहले फ़िल्मों या टीवी पर ही प्रसिद्धि पाने का अवसर मिलता था। रील्स ने यह अवसर हर साधारण युवा को उपलब्ध कराया है। जैसे- जहाँ गाँव-कस्बों के युवक-युवतियाँ एक वायरल रील के बाद

'इन्फ्लुएंसर' या 'लोकल सेलिब्रिटी' बन गए। यह 'प्रसिद्धि की संभावना' युवाओं को निरंतर रील्स बनाने के लिए प्रेरित करती है।

रील्स केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि रोजगार का साधन भी बन गया है। ब्रांड प्रमोशन, पेड पार्टनरशिप और डिजिटल मार्केटिंग के जरिए इन्फ्लुएंसर्स आय अर्जित कर रहे हैं। कई युवाओं ने इसे 'फुल-टाइम करियर' के रूप में अपनाया है। इससे युवाओं में यह विश्वास पैदा हुआ है कि रील्स बनाना केवल शौक नहीं, बल्कि आजीविका का साधन भी हुआ है। युवा अपने मित्रों और सहपाठियों के बीच ट्रेंडिंग रील्स साझा करने को सामाजिक प्रतिष्ठा मानते हैं। यदि समूह में हर कोई रील्स बना रहा है तो व्यक्ति भी दबाव में आकर वही करने लगता है। कई बार यह समूह दबाव 'क्रेज' को और तीव्र कर देता है। रील्स युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर देते हैं। नृत्य, गायन, अभिनय, कॉमेडी, कविता, फैशन और कला जैसी विविध प्रतिभाएँ इन छोटे वीडियो के माध्यम से सामने आती हैं। पहले जिन युवाओं के पास मंच नहीं था, वे आज लाखों दर्शकों तक अपनी कला पहुँचा पा रहे हैं।

युवाओं में रील्स का सकारात्मक प्रभाव-

रील्स युवाओं को अपनी भावनाएँ, विचार और रचनात्मकता व्यक्त करने का अवसर देती हैं। कई युवा जो सार्वजनिक मंच पर नहीं बोल पाते थे, वे कैमरे के सामने सहज होकर अपनी प्रतिभा दिखाने लगे हैं। कई शिक्षक और विद्यार्थी कठिन विषयों को रील्स के माध्यम से सरल और रोचक ढंग से समझाते हैं। स्वास्थ्य, पर्यावरण और सामाजिक मुद्दों पर बनी रील्स युवाओं को जागरूक भी करती हैं। जैसे कोविड-19 महामारी के समय मास्क, वैक्सीन और स्वास्थ्य सावधानियों से जुड़ी अनेक रील्स ने जन-जागरूकता बढ़ाई। रील्स ने स्थानीय कला, लोकगीत और भाषाओं को नए रूप में प्रस्तुत किया है। गाँव-कस्बों की प्रतिभा आज वैश्विक मंच पर पहचान बना रही है। इससे सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा मिला है और नई पीढ़ी अपनी परंपराओं से परिचित हो रही है। युवा अब केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि उत्पादक भी बन रहे हैं।

युवाओं में रील्स का नकारात्मक प्रभाव -

कई युवा पढ़ाई या काम की बजाय घंटों रील्स देखने में व्यस्त रहते हैं। यह शैक्षिक और पेशेवर जीवन पर नकारात्मक असर डाल रहा है। कई छात्र अपने अध्ययन की बजाय अधिकांश समय मोबाइल पर व्यर्थ गंवा देते हैं। लाइक और फॉलोअर्स की होड़ युवाओं को मानसिक दबाव देती है। कम लाइक्स मिलने पर निराशा और अवसाद तक हो सकता है। 'डिजिटल लत' (Addiction) युवाओं के मानसिक संतुलन को बिगाड़ देती है। रील्स के माध्यम से अफवाहें, हिंसक या अश्लील सामग्री भी फैलती है। यह युवाओं की सोच और व्यवहार को प्रभावित करती है। कई बार युवा खतरनाक स्टंट्स की नकल करते हैं, जिससे दुर्घटनाएँ और जान का खतरा बढ़ता है। स्मार्टफोन और इंटरनेट के सस्ते होने से रील्स संस्कृति गाँवों तक पहुँच चुकी है। शिक्षा पर प्रभाव पड़ा है जैसे कई छात्र पढ़ाई छोड़कर रील्स बनाने में समय देने लगे हैं और साथ ही राजनीति में राजनीतिक दल का चुनाव प्रचार के लिए रील्स का उपयोग कर रहे हैं और संस्कृति पर भी इसका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है जैसे- बॉलीवुड, हॉलीवुड और लोकसंस्कृति का मिश्रण नए रूप में सामने आ रहा है।

निष्कर्ष -

रील्स ने युवाओं की ज़िंदगी को नई दिशा दी है। यह रचनात्मकता, अभिव्यक्ति और उद्यमिता का मंच है, लेकिन साथ ही लत, तनाव और सांस्कृतिक असंतुलन की चुनौती भी प्रस्तुत करता है। यदि युवा पीढ़ी रील्स का प्रयोग संतुलित और जिम्मेदाराना ढंग से करती है, तो यह 'वायरल होती ज़िंदगी' केवल क्षणिक क्रेज न रहकर व्यक्तिगत विकास और सामाजिक प्रगति का माध्यम बन सकती है।

संदर्भ सूची -

* कुमार, अजय (2021). सोशल मीडिया और युवा संस्कृति. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
* मिश्रा, संजीव (2020). डिजिटल युग में समाजशास्त्र. वाराणसीः भारती बुक्स।
* शर्मा, नीता (2020). 'टिकटॉक प्रतिबंध और इंस्टाग्राम रील्स का बढ़ता प्रभाव।' दैनिक जागरण, 12 अगस्त।
* Economic Times (2021). 'Reels drive Instagram's growth in India.'
* गौतम, अनुज (2022). साइबर संस्कृति और युवा पीढ़ी. प्रयागराजः गंगा पब्लिकेशन।

***